अमृत प्रार्थना
भगवान से

प्रार्थना करने से हृदय निर्मल होता है, विनम्र होता है और अपने मन की बात भगवान को हम कह सकते हैं, सुना सकते हैं, अहंकार दूर होता है।

भगवान से प्रार्थना करेंगे कि...हे प्रभु! हे अंतर्यामी! आप इस सृष्टि के सृजन करता,पालन करता और संहार करता है। इस सृष्टि को बनाने वाले, बनाकर इसकी रक्षा,पालन पोषण करने वाले व समय आने पर इस सृष्टि को मिटाने वाले भी आप ही हैं। हम लोग व्यर्थ में ही अभिमान धारण करते हैं। व्यर्थ में ही अपने आप को कर्ता समझते हैं जबकि सब के *कर्ता-धर्ता आप* ही हैं। सबको प्रेरणा प्रदान करने वाले आप ही हैं।

जगत में जो भी आप की शरण में है आ गया। वह अभय हो जाता है। उसे किसी से भी भय नहीं लगता। जब तक वह रक्षक को किसी और को मानता है, अर्थात जीव को मानता है तब तक वह सदा भयभीत रहता है। लेकिन जब यह परम रक्षक परमात्मा की शरण में आ जाते हैं तो वह परम अभय हो जाते हैं। आज रक्षाबंधन का पर्व है ।जो भगवान के पास में बंधा हो , या भगवान से प्रेम की डोर से बांध लिया है,भगवान से प्रेम भाव से बंध गया तो भगवान की जिम्मेदारी हो जाती है उसकी रक्षा करने की। वह जगत के बंधनों से मुक्त हो जाता है। जगत में वह बंधन ,बंधन है, लेकिन जब भगवान के पास में बंध जाता है तो वह जगत के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

अतः हे प्रभु! अब तक हमने जगत से डोर बांधी ,जगत के बंधनों से हम बंधे,आसक्ति, मोह, ममता, राग, द्वेष आदि कई प्रकार के बंधनों

से बंधे हैं, ना जाने कितने जन्मों से बंधे हैं,और ना जाने कितने जन्मों तक बंधे रहेंगे और उन बंधनों को उन गाठों को हम भी खोल नहीं सकते।

हममें सामर्थ नहीं है, लेकिन आप में सामर्थ है।

आप अपनी शरण में आए हुए उन भक्तों के आसक्ति रुपी बंधनों को,उन गाठों को खोल सकते हैं। अतः हम आपकी शरण में आए हैं। उन सारे के सारे बंधनों को आप खोल दें, उन्हें तोड़ दें।

ॐ शांति शांति शांति!